कार्यालय प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय सनावल

जिला–बलरामपुर–रामानुजगंज (छ.ग.)

(संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय,सरगुजा अम्बिकापुर छ.ग.से संबंद्व)

विशिष्ट कोड–3606 मो.नं. 7587192835,7354678030

Website: www.gcsanawal.ac.in Email ID – principalgcs7575@gmail.com

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का प्रतिवेदन

" जनजातीय विकास चुनौतियॉ और संभावनाएँ "

शासकीय महाविद्यालय, सनावल जिला–बलरामपुर छ.ग. द्वारा एक दिवसीय अन्तर्विषयक राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन 15 फरवरी 2020 को किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में छ.ग. राज्य के पूर्व मंत्री एवं वर्तमान में राज्यसभा सांसद माननीय रामविचार नेताम जी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ.एस.के. त्रिपाठी (क्षेत्रीय अपर संचालक उच्च शिक्षा विभाग सरगुजा संभाग, अम्बिकापुर) ने की। आधार वक्ता के रूप में डॉ. अनुज लुगुन (साहित्य अकादमी पुरूस्कार प्राप्त कवि एवं सहायक प्राध्यापक हिन्दी, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय गया, बिहार) उपस्थित थे। प्रथम तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ डॉ. कर्मानन्द आर्य (कवि एवं समीक्षक, सहायक प्राध्यापक हिन्दी, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय गया, बिहार)) उपस्थित थे। द्वितीय तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ डॉ. बबलू सिंह (संपादक रिसर्च जर्नल, सहायक प्राध्यापक हिन्दी, जगदीश शरण हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमरोहा, उ.प्र.) उपस्थित थे। तृतीय तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ डॉ. अजय कुमार (लेखक एवं कवि, सहायक प्राध्यापक हिन्दी, महामाया राजकीय महाविद्यालय, कौशाम्बी, उ.प्र.) उपस्थित थे। चतुर्थ तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ डॉ. धर्मेन्द्र कुमार (साहित्यकार, सहायक प्राध्यापक हिन्दी, श्री अग्रसेन पी.जी. कालेज मउ रानीपुर झांसी, उ.प्र.) उपस्थित थे। पंचम तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ डॉ. प्यारेलाल आदिले (प्राचार्य एवं राजनीति विज्ञान विभाग , जे.बी.डी. महाविद्यालय, कटघोरा, कोरबा छ.ग.) उपस्थित थे। समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ आर.एस.अग्रवाल प्राचार्य एवं इतिहास विभाग, शासकीय लरंगसाय स्नातकोत्तर एवं अग्रणी महाविद्यालय, रामानुजगंज उपस्थित थे। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ.पी.आर. कोसरिया प्राचार्य एवं भाषाविद शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर ने की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. बी.के.गर्ग (प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय, राजपुर), श्री पीयूष कुमार (प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय, रामचन्द्रपुर), श्री बाबूलाल लहरे (पोषक शाला प्राचार्य, शाकीय उ.मा.विद्यालय, राचन्द्रपुर), श्री बी.डी.लाल गुप्ता (जनपद उपाध्यक्ष, राचन्द्रपुर जिला–बलरामपुर छ.ग.) उपस्थित थे। इस आयोजन में छ.ग., म.प्र., उ.प्र., बिहार आदि राज्यों के शिक्षक एवं शोधार्थी उपस्थित हुए।

कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय अतिथियों द्वारा धूप–दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रगान एवं छ.ग. के राजगीत से विधिवत प्रारंभ करते हुए संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया तथा कार्यक्रम के समापन में वन्देमातरम् गीत गाया गया। इस संगोष्ठी में उदघाटन सत्र, समापन सत्र एवं पॉच तकनीकी सत्र हुऐ जिसमें आमंत्रित विषय विशेषज्ञों ने अपने उदबोधन दिये तथा अन्य वक्ता एवं शोध छात्रों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया।

इस संगोष्ठी के संयोजक एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.एच.पी.घृतलहरे ने स्वागत उदबोधन देते हुए संगोष्ठी के विषय, रूप–रेखा पर प्रकाश डालते हुए महाविद्यालय की विकास यात्रा को संक्षिप्त में रेखांकित किया। उन्होंने जनजातीय समाज उपेक्षित क्यो? इस विषय पर बात रखते हुऐ आदिवासी समाज की पीड़ा की ओर ध्यान आकृष्ट किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय रामविचार नेताम जी ने कहा कि लोग आदिवासी जीवन की बात करते है और हम उसे जीते हैं, आज भी आदिवासी समाज के प्रति आम धारणा नहीं बदली हैं, संविधान के रास्ते पर चल कर ही जनजातीय समाज विकास कर सकेगा। उन्होंने आयोजन की सराहना करते हुऐ कार्यक्रम की सफलता की अग्रिम शुभकानाए दी। आधार वक्ता डॉ. अनुज लुगुन ने कहा कि आदिवासी समाज प्राकृतिक और सांस्कृतिक रूप से संपन्न समाज हैं पर वह विभिन्न टुकड़ों में बॅटा हुआ और विभिन्न षड्यंत्रों का शिकार हैं, उसे आत्मचिंतन की जरूरत हैं।

.....02

डॉ. कर्मानन्द आर्य ने कहा कि प्राचीन साहित्य ने जनजातीय समाज को मनुष्य की गरिमा से नीचे रखा था लेकिन आदिवासी विमर्श ने उनके जीवन को नये रूप में गरिमा प्रदान करते हुए विश्व मंच पर स्थापित करने का काम किया हैं। डॉ. बबलू सिंह ने कहा कि जनजातीय समाज अपने इतिहास को जाने और विज्ञान की नयी टेक्नोलाजी से जुड़कर भविष्य को संवारने का काम करे। डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने अपने उदबोधन में जनजातियों की समस्याओं को रेखांकित करते हुऐ संविधान में किये गये विशेष प्रावधान एवं भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न योजनाओं का लाभ लेने की अपील की। डॉ. अजय कुमार ने जनजातीय समाज की लोक संस्कृति की चर्चा करते हुए इनके महत्व एवं संरक्षण की बात कहीं। डॉ. प्यारेलाल आदिले ने जनजातीय समाज के राजनीतिक एवं आर्थिक पिछड़ेपन पर प्रकाश डालते हुए विकास की संभावनाओं पर बात की। डॉ.पी.आर.कोसरिया ने आदिवासी समाज के उपर लिखे जा रहे साहित्य पर प्रकाश डाला। डॉ.आर.एस.अग्रवाल ने आदिवासी समाज के इतिहास को रेखांकित करते हुए कहा कि उनका अपना एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक इतिहास हजारों वर्षों से परम्परागत रूप से चला आ रहा हैं जिसके संरक्षण की जरूरत हैं।

प्रत्येक सत्र के समापन पर महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं द्वारा जनजातीय संस्कृति पर आधारित सामूहिक लोक नृत्य प्रस्तुत किये गये। इस संगोष्ठी में लगभग 250 लोग सम्मिलित हुए जिसमें 76 प्रतिभागियों ने पंजीयन कराया। अतिथियों का स्वागत गुलदस्ते (बुके) से किया गया और उनके उदबोधन उपरान्त स्मृति चिन्ह (मोमेन्टों) प्रदान किया गया। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। सभी उपस्थित जनसमुदाय के लिए चाय–नाश्ते एवं भोजन की पर्याप्त व्यवस्था की गई थी। ऐसे सुदूर अंचल में विद्वतजनों की गरिमामय उपस्थिति एवं उद्बोधन से महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं व कुछ पालकों में भी काफी प्रेरणा व उत्साह का संचार हुआ। सभी ने कार्यक्रम की बहुत सराहना की और विभिन्न समाचार पत्रों ने अपने प्रिंट मीडिया में इसे अच्छा कवरेज दिया।

(डॉ. हेमन्त पी.के. घृतलहरे)
संयोजक/प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय,सनावल
जिला–बलरामपुर (छ.ग.)